४४: समाज में पूर्णता-२

दिनांक -२६/१२/११

सर्वतोमुखी समाधान के आधार पर ही समृद्धि का अनुभव है | यह प्रवृत्ति अर्थात समृद्धि सहज प्रवृत्ति छः आधार पर होता है जिनसे सर्वतोमुखी समाधान का प्रमाण स्पष्ट होता है | समृद्धि के लिये समाधान के अलावा कोई सूत्र नहीं है, जिनके आधार पर समृद्धि का अनुभव हो सके | सर्वमानव सुख, शांतिपूर्वक जीना ही चाहता है | यह चाहत आदिकालीन मानव से आज तक विद्यमान है | इसका आधारभूत अभ्युदय न होने के आधार पर अभ्युदय का मतलब सर्वतोमुखी समाधान का शिक्षा, आचरण, व्यवस्था, संविधान अभी तक धरती पर जितना भी प्रयास हुआ है, उसके फलन में तैयार नहीं हुआ है | केवल सह-अस्तित्ववादी विचार के आधार पर ही विकल्प रूप में तैयार हुआ है |

विकल्प अपने में विकसित चेतना ही है | विकसित चेतना का वांगमय है अथवा विकसित चेतना सहज वांगमय है | यह मध्यस्थ दर्शन सहज है | विगत वांगमयों से इस वस्तु या भाषा को मिलाने से कुछ नहीं निकलेगा | ऐसा यदि कोई बुद्धिजीवी मानने वाला प्रयास करता भी है, वो काला दीवाल के सामने ही जायेगा | इसे हमने भले प्रकार से देख लिया है | इसी ढंग से विकल्पात्मक अध्ययन विधि लिख चुके हैं | अध्ययन को बताया है – शब्द के अर्थ के स्वरूप में अस्तित्व में विकल्पात्मक वस्तु का बोध होना – यह स्मरण पूर्वक, आत्मा के साक्षी में ही होना पाया गया है | ऐसे अध्ययन के लिए विधि को बताया है – श्रवण, मनन, साक्षात्कार | साक्षात्कार पूर्वक निश्चित अवधारणा की स्थापना होता है, इसको हमने कहा है निदिध्यासन | श्रवण मध्यस्थ दर्शन सहज वस्तु का है | दुसरे किसी बात का नहीं | मनन, श्रवण से प्राप्त अर्थों का निष्कर्ष एवं जीने में अभ्यास है | साक्षात्कार न्याय धर्म सत्य का ही होना है | परम्परागत समाधि, निदिध्यास नाम से जो कुछ भी लिखा है, उससे यह वस्तु मिलता नहीं – उन वाङ्मयों में जो कुछ भी लिखा है, दृष्टा, निर्विचार, इत्यादि, वही होता है | ब्रह्म ज्ञान, सत्य ज्ञान, धर्म ज्ञान, न्याय ज्ञान होता नहीं | जीने का कोई प्रयोजन निकलता नहीं | इसे हम भले प्रकार से समाधि में देख चुके हैं | समाधि विधि से विकल्प वस्तु को प्राप्त करने के लिए अनुसन्धान विधि ही है, जो संयम के बिना होता नहीं | संयम, समाधि के बिना होता नहीं | अज्ञात को ज्ञात करने का बिंदु निश्चित हुए बिना समाधि होता नहीं | समाधि के लिए कोई निश्चित पद्धति नहीं है | अभ्यास ढेर सारे हैं | इसीलिए परम्परागत ध्यान-अभ्यास विधियों के सहारे की आवश्यकता नहीं है, विकल्पात्मक अध्ययन के लिए | वहां जाने से परेशानी ही होगी | हर मानव इसे तय करने में स्वतंत्र है |

यह सब सह-अस्तित्ववादी नजरिया के आधार पर कहा जा रहा है | नजरिया का मतलब अनुभवमूलक विधि तैयार होने से है | इसे भली प्रकार से जाँचा गया है | निष्कर्ष यही निकला कि सर्व मानव प्रकारांतर से मनमानी करते हुए भी सुख, शांतिपूर्वक जीना चाहता है | आज भी सकल कुकर्म करता हुआ आदमी का अध्ययन करने से यही स्पष्ट होता है कि आदमी सुख, शांतिपूर्वक जीना चाहता है अथवा जीने के अर्थ में ही संघर्ष करता है | इसे हर मानव शोध कर सकता है | मानव ज्ञानावस्था में होने के आधार पर सोचने, समझने, मूल्यांकन करने, अपनाने, नहीं अपनाने की व्यवस्था में जीता है | यही व्यक्तिवाद, समुदायवाद रूप में आज भी प्रकट है | इन दोनों वाद से मानव में मानवीय व्यवस्था की ओर गति, पहचान और प्रमाण होना सम्भव नहीं है | इसी आधार पर विकल्प विधि से ही सह-अस्तित्व रुपी अस्तित्व दर्शन ज्ञान, जीवन ज्ञान, मानवीयतापूर्ण आचरण ज्ञान सह-अस्तित्ववाद रूप में प्रस्तुत हुआ है | यही अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित चिंतन ज्ञान है |

चिंतन का प्रयोजन सहअस्तित्व, अध्ययनपूर्वक अर्थात साक्षात्कार पूर्वक बोध सुलभ होने के अर्थ में है | यह अवधारणा पूर्वक ही होना पाया गया है | सहअस्तित्व बोध होने के पश्चात ही प्रमाणित होने का विधि तैयार होता है | प्रमाणित होने के क्रम में गुणात्मक परिवर्तन होने की सम्भावना है | इस प्रकार विकसित चेतना पूर्वक मानव चेतना से शुरू करते हैं | मानव चेतना प्रकट होने के पश्चात ही देव चेतना, दिव्य चेतना प्रकट होता है | यही निर्भ्रांत होना बोध पूर्णता एवं अस्तित्व में अनुभव विधि से संभव है | यही सत्य बोध एवं सत्य सहज अनुभव है | इसका धारक वाहक केवल मानव ही है दूसरी भाषा में सर्व देश कालीय मानव ही है | धारकता का तात्पर्य समझने से है | वाहकता का तात्पर्य प्रमाण प्रस्तुत करने से है | इस ढंग से समझदारी का ही मानव जात का परम्परा है | अभी मानव जात ज्ञानी, विज्ञानी, अज्ञानी के रूप में गण्य है | इन तीनों का सोच व्यक्तिवाद, समुदायवाद में फंसा हैं | व्यक्तिवाद भोग, अतिभोग, बहुभोग रूप में गण्य है | समुदायवाद संघर्ष और युद्ध के लिये गण्य हुआ है | इन तमाम बातों को ध्यान में लाने पर यह सुनिश्चित होता है कि विकल्प की ओर ध्यान देना आवश्यक है | अभी तक समुदायों को समाज माना है | समुदाय सीमाओं को राष्ट्र माना है | सीमायें इसलिए हैं कि खनिज एवं वन का उपयोग कर सकें समृद्ध होने के अर्थ में | अभी तक के प्रयास में जो कुछ भी किया है उसका अंतिम परिणाम सुविध, संग्रह के रूप में गण्य हुआ है | सुविधा, संग्रह का तृप्ति बिंदु मिलता नहीं | संग्रह के बाद और संग्रह, सुविधा के बाद और सुविधा मानव में घटित हो चुका है | अंतिम सुविधा, अंतिम संग्रह का बिंदु अभी तक तैयार नहीं हुआ | इसी आधार पर भौतिकवाद ने निरंतर विकास को स्वीकारा है | विकास के अर्थ में नित्य नवीनता आते ही रहेगा | इस प्रकार सुविधा, संग्रह का तृप्ति बिंदु अथवा अंतिम बिंदु नहीं है | मानव कृत फल परिणामों का अथ, इति होना आवश्यक है | अथ का मतलब आधार तथा इति का मतलब परिवर्तन व परिणाम का अंतिम बिंदु | परिणाम, परिवर्तन जो कुछ भी हो रहा है सकारात्मक पक्ष में वह आहार, आवास, अलंकार, दूरश्रवण, दूरदर्शन, दूरगमन इन छः बिंदुओं के आधार पर होता है | इसे पाने के क्रम में नकारात्मक बिन्दुएँ तीनों प्रकार के उन्माद, चारों प्रकार के विषय, पाँचों प्रकार के संवेदनाओं के अर्थ में प्रचलित हुआ है | किसी का संवेदना, विषय अभी तक तृप्त नहीं हुआ है |

विषयों को चार रूपों में मानव ने पहचाना है | यह प्राचीन समय से पहचान हो चुकी है | साथ में पांच प्रकार के संवेदनाएं पहचान हो चुके हैं | इसी के आधार पर तीनों प्रकार के उन्माद, दो प्रकार के संघर्ष स्वीकार है | प्रचलित उन्मादों को अथवा भौतिकवादी विधि से प्रचलित उन्मादों को लाभोन्माद, भोगोन्माद, कामोन्माद के रूप में पहचाना जाता है | संघर्ष को युद्ध और युद्ध को युद्ध के लिये करना देखा जाता है | अत्याधुनिक दृष्टि भी इसी के पक्ष में कार्य कर रहा है | यह पूरा नकारात्मक है | जैसा युद्ध जीने के स्वरूप में प्रमाण होता नहीं | नौकरी जीने के स्वरूप में प्रमाण होता नहीं | इस विधि से मानव का फंसाहट लाभोन्माद, कामोन्माद, भोगोन्माद, संघर्ष और युद्ध में ही है | सर्वाधिक आदमी इसी क्रम में प्रवृत्त है | इसका जो फल परिणाम हुआ, यही अपराध कृत्य के रूप में गण्य हुआ |

विकसित चेतना विधि से जीकर देखने पर, भ्रमित मानव के कृत्यों से धरती बीमार होने के रूप में परिणीत होना स्वीकार हुआ | यह तापग्रस्त होने के रूप में स्वीकार हुआ | अभी तक तापग्रस्त होने का जिम्मेदारी तय नहीं हुआ | संघर्ष, सुविधा और संग्रह के लिये तथा युद्ध के लिये होता आया | इन सभी तथ्यों का अध्ययन करने से पता चलता है कि केवल मानव ही अपराध एवं न्यायपूर्वक जीने का अधिकारी है | न्याय का स्वरूप अपने में समाधान,समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व पूर्वक जीना है और नियम, नियंत्रण, संतुलन, स्वधन, स्वनारी/स्वपुरुष, दयापूर्ण कार्य व्यवहार प्रमाणित हो पाता है | इसका आधार विकसित चेतना में पारंगत होना ही एकमात्र उपाय समझ में आया है, इसे जीकर देखा है |

सर्वशुभ हो! जय हो ! मंगल हो! कल्याण हो!

- ए. नागराज | प्रणेता एवं लेखक - मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद) | भजनाश्रम, अमरकंटक, जिला-अनूपपुर (म. प्र.)